Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मध्यकालीन भारत (भाग–1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHS03

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मध्यकालीन भारत (भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web: www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1.	पूर्व मध्यकालीन भारत एवं अरबों की सिंध विजय	5–30
2.	चोल साम्राज्य	31–42
3.	उत्तर भारत में तुर्कों की विजय	43–50
4.	दिल्ली सल्तनत	51–60
5.	खिलजी वंश	61–74
6.	तुगलक एवं लोदी वंश	75–93
7	विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य	94–113
8.	दिल्ली सल्तनतः शासन तथा आर्थिक-सामाजिक जीवन	114–129
9.	सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य	130–135

अध्याय
1

पूर्व मध्यकालीन भारत एवं अरबों की सिंध विजय (Early Medieval India and Sindh victory of Arabs)

1.1 भारतीय सामंतवाद
1.2 पूर्व मध्यकालीन भारत में अर्थव्यवस्था
1.3 पूर्व मध्यकालीन भारत में समाज
1.4 उत्तर भारत में प्रमुख राजवंश तथा राजनीतिक संरचनाएँ
1.5 राजपूतकालीन राजनीतिक व्यवस्था
1.6 राजपूतकालीन सामाजिक संरचना
1.7 कला एवं संस्कृति
1.8 अरबों की सिंध विजय

1.1 भारतीय सामंतवाद *(Indian Feudalism)*

सामंतवाद

पूर्व मध्यकालीन समाज में एक नवीन वर्ग का उद्‌भव हुआ जिसे सामंत वर्ग के रूप में जाना गया। इन सामंतों के हित भूमि से संबद्ध थे। मूलतः नए भू-स्वामियों के रूप में ही सामंतों के **भू-स्वामित्व संबंधी सर्वोच्च अधिकार** स्थापित हुए और उन्हें **राजस्व वसूली एवं प्रशासनिक अधिकार** इस भूमि क्षेत्र में प्राप्त हुए। यद्यपि भारत में सामंतवाद का अंकुरण कुषाण-सातवाहन काल से ही दिखाई देने लगता है, लेकिन इसका पूर्ण विकास पूर्व मध्यकाल में ही हुआ। इस काल की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों ने सामंतवाद के विकास के लिये उपयुक्त आधार प्रदान किया।

यह सामंतवाद राजनीतिक व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक संबंधों को प्रदर्शित करता है। राजनीतिक क्षेत्र में **सत्ता का विकेन्द्रीकरण** हुआ, एक राजा के अधीन अनेक सामंतों का प्रादुर्भाव हुआ और ये सामंत अनेक राजनीतिक इकाइयों के रूप में स्थापित हुए।

आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर स्थानीय उत्पादन इकाइयाँ क्रियाशील हुईं तथा आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला तथा यह एक **बंद अर्थव्यवस्था** (Closed Economy) के रूप में सामने आया। **सामाजिक क्षेत्र** में **किसानों के शोषण** एवं **सामाजिक संघर्ष** को प्रोत्साहन देने के रूप में सामने आया। **धार्मिक क्षेत्र** में **निम्न वर्गों के शोषण** को औचित्य प्रदान करने वाली अवधारणा सामने आई।

कुल मिलाकर नए भूमि संबंधों ने सामंत के रूप में एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जिसने तत्‌युगीन जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित कर एक ऐसी संरचना को निर्मित किया जो सामंतवादी व्यवस्था के रूप में जानी जाती है।

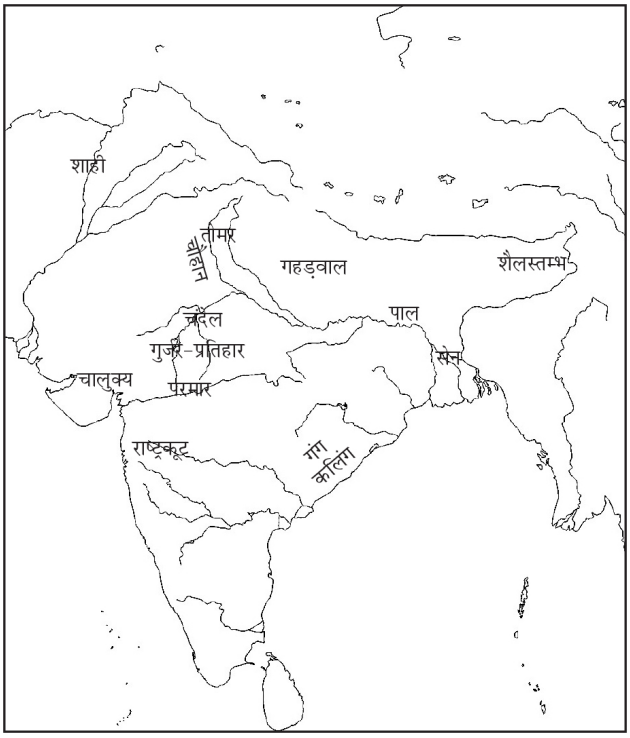

चित्र: पूर्व-मध्यकालीन भारतीय राज्य (750 ई. - 1200 ई.)

- अरबों ने भारत में धर्मराज्य स्थापित करने का प्रयास नहीं किया। इस दृष्टिकोण में उनकी राजनीतिक आवश्यकता का पुट शामिल था। उन्होंने इस्लाम धर्म और इस्लामी राज्य के बीच अंतर रखा हिन्दुओं को महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया गया। मध्ययुग में अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद बिन तुगलक, शेरशाह एवं अकबर की नीतियों में इसकी निरंतरता देखी जा सकती है।
- अकबर की धर्मनिरपेक्षता में जो राजनीतिक पहलू थे वे संभवत: अरबों ने अपने अल्पकालीन प्रवास में ही समझ लिये थे।

आर्थिक प्रभाव

- अरबों ने व्यापारिक गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सिंध प्रदेश के मरुभूमि इलाकों में **खजूर की** खेती एवं **ऊँट पालन** का प्रचलन हुआ।
- **दिरहम** के रूप में **मुद्रा प्रणाली** का विकास हुआ। कई सारे नगरों का विकास हुआ, जैसे- मुल्तान, मंसूरा, सेहवान आदि। **बसरा** अंतर्राष्ट्रीय मंडी के रूप में विकसित हुआ जहाँ भारत, चीन एवं अन्य देशों से व्यापारिक सामान आते थे।

सामाजिक प्रभाव

- भारतीय समाज में इस्लामी विचारधारा का प्रसार हुआ। समतावादी समाज के सिद्धांतों को बढ़ावा मिला। मुस्लिम, कारीगरों, विद्वानों, व्यापारियों का भारतीय समाज में प्रवेश हुआ।

सांस्कृतिक प्रभाव

- भारत में **अरब शिक्षा पद्धति** का प्रसार हुआ। अरबी लिपि और भाषा का व्यवहार आरंभ हुआ और लाहौर अरबी शिक्षा के केंद्र के रूप में उभरा। इसके अतिरिक्त **सिंधी लिपि** का विकास हुआ जो अरबों के आक्रमण से पूर्व एक बोली के रूप में स्थापित थी।
- अरबों की विजय के परिणामस्वरूप भारतीय के साथ-साथ अरबी संस्कृति भी पर्याप्त प्रभावित हुई।
- खलीफा मंसूर के समय में भारत से ब्रह्मगुप्त लिखित ब्रह्म सिद्धांत तथा खण्डखाद्यक ले जाकर अरबों ने उसका अरबी में अनुवाद कराया। इसके साथ ही पंचतंत्र का भी अनुवाद कराया।
- अब्बासी खलीफा के समय बगदाद अरब और भारतीय संस्कृतियों का मिलन बिन्दु बन गया। बगदाद में अनुवादशाला का गठन हुआ, जो **बेतुल हिकमा** कहलाई। भारतीय दार्शनिक, चिकित्सक, चित्रकार, कलाकार बगदाद गए और भारतीय ज्ञान-विज्ञान का प्रसार किया। अनेक अरबी विद्वान जैसे सुलेमान, अलइद्रीसी, अलमसूदी आदि भारत आए।
- अरबों ने भारत से ज्ञान-विज्ञान की नई बातें ग्रहण कीं और उनका प्रचार यूरोप में भी किया। अरबों ने **शून्य (0)** का ज्ञान भारत से ही प्राप्त किया।

इस प्रकार यह कहना उचित है कि अरबों के भारत पर आक्रमण का प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रभाव की तुलना में प्रत्यक्ष सांस्कृतिक प्रभाव कहीं अधिक रहा। इस सांस्कृतिक प्रभाव ने सिर्फ अरबों को ही नहीं, संसार के अन्य देशों को भी प्रभावित किया।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. पूर्व मध्यकालीन भारत के अस्थायी स्वरूप के संघटकों को स्पष्ट कीजिये। **UPSC (Mains) 2016**
2. कश्मीर की प्रारंभिक मध्यकालीन मंदिर स्थापत्य कला का संक्षिप्त विवरण दीजिये। **UPSC (Mains) 2015**
3. क्या हमें उपलब्ध भू-स्वामित्व के साक्ष्य प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में सामंतवाद के प्रचलन की थ्योरी का समर्थन करते हैं? **UPSC (Mains) 2015**
4. प्रारंभिक भारत के भूमि अनुदान-पत्रों में आदानी को क्या विशेषाधिकार दिये जाते थे? सामाजिक-राजनीतिक परिवेश के एकीकरण अथवा विघटन के लिये ये भूमि अनुदान-पत्र कहाँ तक उत्तरदायी थे? **UPSC (Mains) 2014**

5. वर्ष 750 से 1200 के मध्य कृषि अर्थव्यवस्था की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिये। **UPSC (Mains) 2014**
6. भारतीय सामंतवाद पर इतिहासकारों द्वारा किन परिवर्तनों की परिकल्पना की गई है? आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। **UPSC (Mains) 2012**
7. पूर्व मध्यकालीन समाज के लिये 'भारतीय सामंतवाद' शब्द की अनुप्रोज्यता पर संक्षिप्त निबंध लिखिये।
8. 'राजपूत शासन के अंतर्गत नागर शैली का संपूर्ण विकास हुआ', इस काल के दौरान निर्मित प्रमुख नागर स्थापत्यों को रेखांकित करते हुए उपरोक्त कथन की व्याख्या कीजिये।
9. राजपूतकालीन राजनीतिक व्यवस्था पर लघु टिप्पणी कीजिये।
10. पूर्व मध्यकाल के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्ण रूप से कृषि पर आधारित थी तथा वाणिज्य-व्यापार पतनशील अवस्था में था। इस कथन की समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।
11. सामंतवाद के विकास में भूमि अनुदान प्रथा की भूमिका पर टिप्पणी लिखें।
12. भारतीय सामंतवाद तथा यूरोपीय सामंतवाद के बीच मुख्य अंतरों को रेखांकित कीजिये।
13. भारतीय सामंतवाद पर इतिहासकारों द्वारा व्यक्त विभिन्न धारणाओं की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिये।
14. राजपूतों के उद्भव के संबंध में इतिहासकारों के विभिन्न दृष्टिकोणों का मूल्यांकन कीजिये।
15. क्या आपके विचार में अरबों की सिंध विजय एक महत्त्वहीन घटना थी? तर्क सहित समझाइये।
16. राजपूत काल के दौरान भारत की सामाजिक संरचना पर लेख लिखिये।

अध्याय
2

चोल साम्राज्य
(Chola Empire)

2.1 चोलों का उद्भव: एक राजनीतिक शक्ति के रूप में
2.2 चोल प्रशासन
2.3 प्रशासनिक इकाई
2.4 चोलकालीन राजनीतिक-प्रशासनिक व्यवस्था की विशिष्टताएँ
2.5 चोलकालीन समाज
2.6 धार्मिक दशा
2.7 चोल कला

2.1 चोलों का उद्भव: एक राजनीतिक शक्ति के रूप में *(Rise of Cholas: As a Political Power)*

चोल पल्लवों के सामंत रहे। इन्होंने पल्लवों की राजनीतिक दुर्बलता का लाभ उठाकर नौवीं सदी में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इस शक्ति का संस्थापक **विजयालय था।**

साम्राज्य विस्तार *(Empire Expansion)*

- चोलों ने अपने साम्राज्यवादी विस्तार के क्रम में विजयालय के नेतृत्व में **पांड्यों** को पराजित कर तंजौर पर अधिकार किया। आगे आदित्य प्रथम ने **पल्लव शासक अपराजित** को पराजित कर संपूर्ण **तोंडमंडल** पर अधिकार जमा लिया। फलस्वरूप चोल राज्य की सीमा अब **राष्ट्रकूट** राज्य की सीमा तक पहुँच गई।
- **परांतक प्रथम** ने **पांड्यों एवं श्रीलंका** की सम्मिलित सेना को **वेल्लूर के युद्ध (915 AD)** में पराजित कर **मदुरै** पर कब्जा कर लिया।
- राजराज प्रथम **(985-1014 AD)** के समय चोल शक्ति का उत्थान हुआ। उसने **गंग वंश** के शासकों और केरल के राजा को पराजित कर **मदुरै** पर पुनः अधिकार किया। उसने कलिंग और चालुक्यों को भी पराजित किया। इसने लक्षद्वीप एवं मालदीव समूहों पर भी अपना आधिपत्य स्थापित किया तथा **श्रीलंका** पर आक्रमण कर उसके **उत्तरी भाग** पर कब्जा किया।

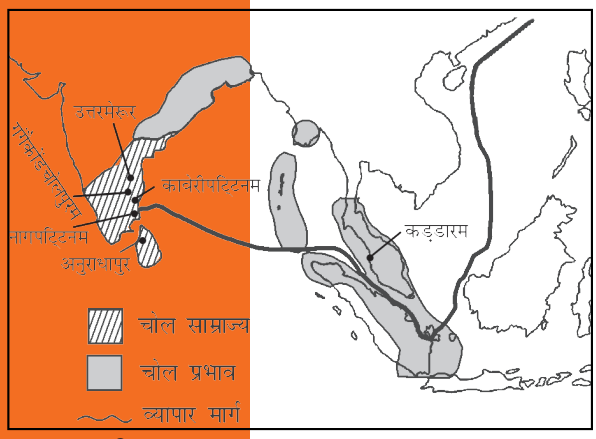

चित्र: राजराज-प्रथम (985-1014 AD) के अधीन चोल साम्राज्य

- राजेंद्र प्रथम ने एक सुदृढ़ **जल एवं थल सेना** के आधार पर चोल साम्राज्य का विस्तार किया। उसने श्रीलंका पर आक्रमण कर संपूर्ण श्रीलंका को जीता। इसके अतिरिक्त **मलय प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा एवं दक्षिण-पूर्व एशिया** के शैलेंद्र शासक को पराजित कर **कडारम पर** अधिकार किया।
- वस्तुतः चोल राज्य तथा चीन के बीच व्यापारिक संबंध में यह साम्राज्य एक कड़ी का कार्य करता था, अतः इसे जीतना आवश्यक था।
- राजेंद्र चोल ने उत्तर-पूर्व में अभियान करते हुए **बंगाल** के शासक **महिपाल** को पराजित किया और **गंगैकोंडचोल** की उपाधि धारण की। इस प्रकार चोलों ने अपने आस-पास से लेकर दूरवर्ती शासकों को भी पराजित किया और एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

अध्याय
3

उत्तर भारत में तुर्कों की विजय (Turks Victory in North India)

3.1 अलबरूनी का भारत संबंधी वृत्तांत
3.2 तुर्कों एवं इस्लाम का भारत में आगमन
3.3 तुर्कों की सफलता के कारण

3.1 अलबरूनी का भारत संबंधी वृत्तांत *(Alberuni's Description of India)*

अलबरूनी का पूरा नाम **अबू रेहान मुहम्मद इब्न अहमद** अथवा **अल बिरुनी** था। उसका जन्म **973 ई.** में मध्य एशिया में **ख्वारिज्म** (खीवा) में हुआ था। **1017 ई.** में महमूद गजनवी द्वारा उसे एक युद्धबंदी के रूप में गजनी लाया गया। उसके बाद अलबरूनी महमूद गजनवी के साथ **भारत** आया। उसने यहाँ **संस्कृत भाषा, भारतीय दर्शन, ज्योतिष शास्त्र** का अध्ययन किया। वह **हिब्रू, संस्कृत, ग्रीक, अरबी और फारसी** भाषा का ज्ञाता था। अलबरूनी ने **अरबी भाषा में 'किताब-उल-हिन्द'** (तहकीक-ए-हिन्द) नामक ग्रंथ लिखा। यह ग्रंथ **80 अध्यायों** में विभक्त है तथा इसमें महमूद गजनवी के समय के भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक दशा के साथ-साथ भारतीय विज्ञान एवं सभ्यता का भी वर्णन है।

भारतीय सभ्यता का वर्णन : भारतीय सभ्यता के वर्णन के क्रम में अलबरूनी ने भारतीय समाज, धर्म-दर्शन, आर्थिक और राजनीतिक पहलू का वर्णन किया है।

भारतीय समाज का वर्णन *(Description of the Indian Society)*

वर्ण व्यवस्था

- अलबरूनी ने भारतीय समाज की प्रमुख विशेषताओं का सविस्तार वर्णन किया है। भारतीय समाज 4 वर्णों में विभक्त था। ऋग्वेद में उल्लेखित चतुर्वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति विषयक मान्यता के आधार पर उसने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया।
- समाज में 4 वर्णों के अतिरिक्त **अंत्यजों की 8 श्रेणियाँ** भी मौजूद थीं, जैसे- चर्मकार, जुलाहा, मछुआरा, बाज़ीगर, शिकारी, टोकरी बनाने वाले आदि। अंत्यजों को नगर और गाँव से बाहर रहना पड़ता था।
- हादी, डोम, चांडाल और बड़हातु का एक अलग वर्ग था। इन्हें **प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न** माना जाता था, जो सफाई के कार्यों में संलग्न थे, जैसे गाँव की सफाई इत्यादि में।
- समाज में ब्राह्मण का सर्वोच्च स्थान था। क्षत्रिय शक्तिशाली लोग थे और वेद पाठ भी करते थे। **वैश्य एवं शूद्र को वेद पाठ का अधिकार नहीं था।** ऐसा करने से इनकी जीभ काट ली जाती थी।

विवाह एवं स्त्रियों की दशा

- हिन्दुओं में विवाह प्रथा प्रचलित थी। विवाह कम उम्र में होते थे। **दहेज प्रथा का प्रचलन नहीं था।** विवाह के समय स्त्री को जो उपहार मिलता था उसे **स्त्री धन** कहा जाता था जिस पर स्त्री का पूरा अधिकार था।
- एक व्यक्ति **4 विवाह** कर सकता था। हिन्दू अपने संबंधियों से विवाह नहीं करते थे।
- समाज में **तलाक प्रथा प्रचलित नहीं थी।** विवाहित पुत्री को पैतृक संपत्ति में अधिकार नहीं था।
- **सती प्रथा** अस्तित्त्व में थी।

खान-पान/ रहन-सहन

- समाज में पशु-वध सामान्यत: प्रतिबंधित था। मांसाहार के लिये कुछ पशुओं का वध किया जाता था। **गाय, घोड़ा, ऊँट, हाथी एवं अंडा खाना प्रतिबंधित था।**

अध्याय
4

दिल्ली सल्तनत
(Delhi Sultanate)

4.1 इल्तुतमिश : 1211-1236 ई.	4.3 रज़िया सुल्तान
4.2 इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी एवं अस्थिरता का काल	4.4 गियासुद्दीन बलबन

दिल्ली सल्तनत की स्थापना उत्तर भारत में तुर्कों के सैन्य अभियान का प्रत्यक्ष परिणाम थी जो लगभग दो शताब्दियों के मध्य दो चरणों में गजनवी और गोरी के द्वारा संपन्न हुई। आगे कुतुब-उद-दीन ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की नींव को मज़बूत किया और उसे मध्य एशिया की राजनीति से पृथक् कर गजनी के शासकों के कानूनी आधिपत्य से मुक्त कराया और उसे एक स्वतंत्र राज्य बनाया। इल्तुतमिश ने ऐबक द्वारा आरंभ किये गए कार्यों को पूरा किया और कई आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधार किये। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत को कानूनी तथा व्यावहारिक रूप से स्वतंत्र राज्य बना दिया। दिल्ली सल्तनत की स्थापना उत्तरी भारत के इतिहास में एक विभाजक रेखा मानी जा सकती है क्योंकि इसके परिणाम जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रकट हुए।

तुर्कों ने उत्तर भारत पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। इस दिल्ली सल्तनत में 1206-90 ई. तक जिन तुर्की शासकों ने शासन किया, उन्हें इतिहास में गुलाम वंश के नाम से जाना जाता है। इस गुलाम वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना गया। इस वंश के अन्य शासक इल्तुतमिश एवं बलबन को माना गया। इन्हें गुलाम वंश का इसलिये कहा जाता है क्योंकि ये सुल्तान या तो स्वयं गुलाम थे या गुलामों के वंशज थे। वस्तुत: तुर्कों में व्यक्ति को दास के रूप में खरीदकर उन्हें प्रशिक्षित कर योग्य बनाने की परंपरा थी। गुलामों को राज्य की उत्तम सेवा करने योग्य बनाया जाता था और अनेक गुलाम सुल्तानों की सेवा करने के योग्य बनाए जाते थे ताकि उनका अधिक-से-अधिक मूल्य प्राप्त हो सके। इस कारण उस समय के तुर्क सुल्तानों के पास अनेक योग्य गुलाम होते थे और वे राज्य सेवा में श्रेष्ठतम पद प्राप्त करते थे।

कुतुबुद्दीन ऐबक, मोहम्मद गोरी का दास (गुलाम) था और गुलाम अवस्था में ही 1206 ई. में सिंहासनारूढ़ हुआ। इसी प्रकार इल्तुतमिश भी आरंभ में कुतुबुद्दीन ऐबक का गुलाम रहा किंतु सिंहासनारोहण से पूर्व ही गोरी ने उसे दासता से मुक्त कर दिया था। इसी प्रकार बलबन भी आरंभ में इल्तुतमिश का गुलाम रहा था।

इतिहासकार इस गुलाम वंश के नामकरण के विरोध में तर्क देते हैं कि 1206-90 के बीच में एक नहीं वरन् तीन वंशों ने शासन किया था और उनके वंश पृथक्-पृथक् थे। ऐबक-कुत्बी वंश, इल्तुतमिश-शम्शी वंश और बलबन-बलबनी वंश से संबद्ध था। ये शासक स्वतंत्र माता-पिता की संतान थे। इस कारण इन सुल्तानों को प्रारंभिक तुर्क अथवा मामलूक सुल्तान (वंश) कहा जाना चाहिये।

4.1 इल्तुतमिश : 1211-1236 ई. *(Iltutmish: 1211-1236 AD)*

इल्तुतमिश इल्बारी तुर्क था। उसने आरंभ में गोरी और ऐबक के सैन्य अभियानों में अपनी योग्यता का परिचय दिया था। 1211 ई. में आरामशाह को पराजित कर उसने सत्ता पर अधिकार किया और तत्पश्चात् उसने एक सुदृढ़ राज्य, एक नियमित शासक और प्रशासक वर्ग, एक राजधानी एवं मौद्रिक अर्थव्यवस्था प्रदान कर दिल्ली सल्तनत की वास्तविक स्थापना की। केवल स्थापना ही नहीं बल्कि अपने कूटनीतिक कौशल से **मंगोल आक्रमण से उसकी रक्षा** भी की।

कठिनाइयाँ

- उसको असंगठित राज्य मिला था जिसमें यल्दौज, कुबाचा की चुनौतियाँ मौजूद थीं। बंगाल में अलीमर्दान तो दूसरी तरफ राजपूत शासक भी चुनौती दे रहे थे।
- उत्तर-पश्चिमी सीमा की **मंगोल आक्रमण** से सुरक्षा करना, साथ ही **खोखरों की चुनौती** का सामना करना।

अध्याय
5

खिलजी वंश
(Khilji Dynasty)

5.1 जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी	5.5 अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधार
5.2 अलाउद्दीन खिलजी व उसका राजत्व सिद्धांत	5.6 अलाउद्दीन खिलजी का बाज़ार सुधार नीति
5.3 अलाउद्दीन का साम्राज्य विस्तार	5.7 अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य सुधार
5.4 अलाउद्दीन खिलजी की मंगोल नीति	5.8 खिलजी वंश का अंत व बरादु क्रांति

अंतिम इल्बरी शासक कैमुअर्स की 1290 में हत्या कर जलालुद्दीन खिलजी ने दिल्ली के सुल्तान की गद्दी प्राप्त की। इस प्रकार **इल्बरी तुर्कों का शासन समाप्त** हुआ और खिलजी वंश की सत्ता स्थापित हुई। खिलजियों के शासन में **दिल्ली सल्तनत में व्यापक परिवर्तन हुए।** इन परिवर्तनों के आलोक में इसे खिलजी क्रांति के नाम से जाना जाता है।

5.1 जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी *(Jalaluddin Firoz Khilji)*

खिलजी वंश का संस्थापक मलिक फिरोज़ था, जिसने भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद जलालुद्दीन की पदवी धारण कर ली। इसने बलबन (इल्बरी तुर्क) के शासनकाल में एक अच्छे सेनानायक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी। उसने कई अवसरों पर मंगोल आक्रमणकारियों का मुकाबला किया और सफलता प्राप्त की। 13 जून, 1290 ई. को कैकूबाद द्वारा निर्मित किलोखरी के महल में जलालुद्दीन ने अपना राज्याभिषेक करवाया और सुल्तान बन गया।

जब वह सुल्तान बना तो उसकी उम्र 70 वर्ष थी, जिसकी झलक उसके शासन में भी दिखाई देती है। क्षेत्रीय प्रसार के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिये जलालुद्दीन खिलजी के पास न तो इच्छाशक्ति थी और न ही संसाधन। उसके छः वर्ष के शासन को सुल्तान की नीतियों तथा उसके समर्थकों के बीच सामंजस्य बनाए रखने के आंतरिक कलह ने मानों जकड़ लिया था। जलालुद्दीन का राजवंश से कोई संबंध नहीं था और दिल्ली की जनता जो एक लम्बे समय से इनके पूर्व के शासकों (इल्बरी तुर्क) के शासन से परेशान थी, जलालुद्दीन और अन्य के शासन करने के अधिकार को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। वस्तुतः दिल्ली सल्तनत को उस समय जलालुद्दीन जैसे उदार शासक की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि एक कठोर और अनुशासनप्रिय शासक की ज़रूरत थी।

जलालुद्दीन की नीति तुर्की सरदारों एवं बलबन के संबंधियों को संतुष्ट करने की थी। जो जिस पद पर था, उसे उसने बना रहने दिया। साम्राज्य-विस्तार में भी उसे कोई सफलता नहीं मिली तथा रणथंभौर पर उसका अभियान विफल रहा और मंगोलों के साथ उसने संधि कर ली। इल्बरी सामंतों को हटाने के लिये उसने कोई प्रयास नहीं किया।

मुसलमानों का दक्षिण भारत पर प्रथम आक्रमण जलालुद्दीन के समय देवगिरि के शासक रामचंद्र देव पर हुआ। विद्रोहियों के प्रति जलालुद्दीन ने दुर्बल नीति अपनाई और कहा "मैं एक वृद्ध मुसलमान हूँ और मुसलमानों का रक्त बहाने की मेरी आदत नहीं है।" जलालुद्दीन के काल में लगभग दो हज़ार मंगोल इस्लाम धर्म को स्वीकार कर दिल्ली के निकट मुगलपुर (मंगोलपुरी) में बस गए जो नवीन मुसलमान कहलाए।

इन सभी कठिनाइयों का समाधान सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या के रूप में हुआ। अली गुर्शस्प ने जलालुद्दीन को कड़ा बुलाकर धोखे से हत्या कर दी और सत्ता पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

5.2 अलाउद्दीन खिलजी व उसका राजत्व सिद्धांत *(Alauddin Khilji and his Theory of Kingship)*

- एक उदारवादी शासक की हत्या कर अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली की सत्ता पर अधिकार किया था। अतः अपने इस कृत्य को एवं सिंहासनारोहण का **औचित्य प्रमाणित** कर **जनता की सहानुभूति एवं स्वामिभक्ति प्राप्त** करना अलाउद्दीन के लिये कठिन चुनौती थी।

अध्याय
6

तुगलक एवं लोदी वंश
(Tughlaq and Lodi Dynasty)

6.1 गियासुद्दीन तुगलक शाह	6.7 फिरोजशाह तुगलक की धार्मिक नीति
6.2 मुहम्मद बिन तुगलक	6.8 लोदी वंश
6.3 मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाएँ	6.9 सिकंदर लोदी
6.4 फिरोजशाह तुगलक	6.10 इब्राहिम लोदी
6.5 फिरोजशाह तुगलक के प्रशासनिक सुधार	6.11 कश्मीर में ज़ैन-उल-आबिदीन का शासन
6.6 फिरोजशाह तुगलक के जनकल्याणकारी कार्य	

तुगलक वंश दिल्ली में जिस समय सत्ता में आया, उस समय सल्तनत राजनीतिक अस्थिरता से ग्रस्त थी। भारत के प्रमुख प्रांतों या राज्यों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। सल्तनत का प्रभावशाली नियंत्रण केवल केंद्रीय स्तर तक ही रह गया था। प्रशासनिक इकाइयाँ अव्यवस्था का शिकार थीं। अत: यह स्वाभाविक था कि गियासुद्दीन तुगलक ने अपना पूरा ध्यान राज्य की आर्थिक एवं प्रशासनिक स्थिति को सुधारने की ओर केंद्रित किया था। लेकिन बाह्य प्रांतों द्वारा अपनी स्वतंत्रता घोषित कर देने के कारण उन्हें अपने नियंत्रण में लेना अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था।

इस काल में सल्तनत का चरम विस्तार भी हुआ और इसका विघटन भी प्रारंभ हुआ। निरंकुश राजतंत्र की परंपरा दुर्बल पड़ी और कल्याणपरक शासन का आरंभ हुआ। धार्मिक सहिष्णुता की नीति का सर्वप्रथम कार्यान्वयन हुआ तथा धार्मिक कट्टरता का भी प्रादुर्भाव हुआ। अलाउद्दीन की नीतियों ने दिल्ली सल्तनत को साम्राज्य विस्तार की ओर अग्रसर कर दिया था। तुगलक शासकों ने इन्हीं नीतियों पर चलकर साम्राज्य का विस्तार किया। उन्होंने विभिन्न तरह से साम्राज्य का विस्तार करते हुए कल्याणकारी कार्य भी किये, किंतु दिल्ली सल्तनत को विघटन से रोकने में असमर्थ रहे।

6.1 गियासुद्दीन तुगलक शाह *(Ghiyasuddin Tughlaq Shah)*

गियासुद्दीन तुगलक ने खुसरो शाह को अपदस्थ करके एक नवीन राजवंश की स्थापना 1320 ई. में की, जिसे तुगलक वंश के नाम से जाना जाता है। 1320 ई. में सिंहासन पर बैठने के बाद गाज़ी तुगलक ने गियासुद्दीन तुगलक शाह की पदवी धारण की तथा उसने अगले पाँच वर्षों तक दिल्ली पर शासन किया।

गियासुद्दीन तुगलक के समक्ष कई समस्याएँ थीं। प्रांतों में विद्रोह हो रहे थे। बंगाल और सिंध पर नाममात्र का शासन रह गया था तथा गुजरात के क्षेत्रों में विद्रोह जारी था। राजपूत शासक (राजस्थान) अपनी शक्ति का विस्तार करने में लगे हुए थे, जबकि दक्षिणी राज्यों में अशांति और उपद्रव का वातावरण व्याप्त था। खुसरो शाह द्वारा अमीरों और उलेमाओं को संतुष्ट करने के लिये राजकोष खाली कर दिया गया था, जिससे वित्तीय संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

गियासुद्दीन ने सर्वप्रथम सामंतों से अपनी सत्ता की पुष्टि करवाई तथा उलेमाओं से भी इन सभी समस्याओं को समाप्त करने के लिये समर्थन मांगा और उन्होंने गियासुद्दीन के शासक बनने का समर्थन दिया। इस तरह गियासुद्दीन की सत्ता को वैधानिक स्वीकृति भी मिली और उसकी सत्ता मज़बूत हुई, लेकिन इससे सामंतों और उलेमाओं की शक्ति में वृद्धि हुई तथा निरंकुश राजतंत्र की परंपरा दुर्बल हुई।

गियासुद्दीन ने सर्वप्रथम विद्रोहों पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिये सक्रिय उपाय किये। वह एक सफल सेनानायक भी था। 1321 ई. में गियासुद्दीन ने अपने पुत्र जौना खाँ को तेलंगाना (वारंगल) के शासक प्रताप रुद्रदेव के विरुद्ध अभियान के लिये भेजा। जौना खाँ वारंगल के विद्रोह को दबाने में असफल रहा, लेकिन जौना खाँ ने 1322 ई. में पुन: वारंगल पर अभियान किया। तेलंगाना (वारंगल) पर तुर्कों का अधिकार हो गया और इसे कई प्रशासनिक भागों में बाँट दिया गया। 1324 ई. में गियासुद्दीन ने स्वयं बंगाल पर चढ़ाई की और उसे जीतकर दिल्ली सल्तनत में पुन: मिला लिया। लौटते वक्त

अध्याय
7

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य (Vijayanagara and Bahmani Empire)

7.1 विजयनगर साम्राज्य
7.2 विजयनगर–बहमनी संघर्ष
7.3 विजयनगर राज्य की प्रकृति
7.4 विजयनगर साम्राज्य : प्रशासनिक संरचना व सामाजिक जीवन
7.5 विजयनगर साम्राज्य की अर्थव्यवस्था
7.6 विजयनगर साम्राज्य में कला एवं साहित्य
7.7 विजयनगर साम्राज्य के संबंध में विदेशी यात्रियों के वृत्तांत
7.8 बहमनी साम्राज्य
7.9 बहमनी सुल्तान और इनका शासन
7.10 बहमनी साम्राज्य का विघटन
7.11 बहमनी साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था
7.12 बहमनी साम्राज्य : समाज, अर्थव्यवस्था तथा सांस्कृतिक योगदान

मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में हुए विद्रोहों के फलस्वरूप अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ। दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्य की स्थापना भी मुहम्मद तुगलक के समय में ही हुई थी। जिस समय उत्तर भारत में विघटनकारी शक्तियाँ प्रबल होकर अव्यवस्था फैला रही थीं, ठीक उसी समय दक्षिण भारत में विजयनगर एवं बहमनी राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक उपाय किये गए। इन दोनों राजवंशों में आपसी संघर्ष चलता रहा, जब तक कि बहमनी राज्य का विघटन नहीं हुआ। दक्षिण भारत में इन दोनों वंशों के शासकों का इतिहास अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

7.1 विजयनगर साम्राज्य *(Vijayanagara Empire)*

- विजयनगर की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने की। हरिहर एवं बुक्का प्रारम्भ में वारंगल के काकतियों के सामंत रह चुके थे। बाद में वे आधुनिक कर्नाटक में स्थित काम्पिल्य के राज्य की सेवा में लिप्त हो गए। जब एक मुस्लिम विद्रोही को काम्पिल्य के शासक ने अपने यहाँ शरण दी तो मुहम्मद बिन तुगलक ने काम्पिल्य को रौंद कर सल्तनत में मिला लिया। इसी के साथ कैदी के रूप में हरिहर व बुक्का भी लाए गए, जहाँ उनसे इस्लाम कबूल कराया गया।
- जब काम्पिल्य में तुर्की शासन के विरुद्ध विद्रोह हुआ तो हरिहर एवं बुक्का को उसका दमन करने के लिये भेजा गया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने विद्यारण्य के प्रभाव से हिन्दू धर्म ग्रहण किया और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- हरिहर व बुक्का ने संगम वंश की स्थापना की जिसकी सत्ता 1336 ई. से 1485 ई. तक बनी रही। 1346 ई. में विजय नगर के शासकों ने होयसल राज्य पर अधिकार कर लिया। इसी अवधि में बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई और दक्षिण भारत में प्रबुद्ध रूप से संघर्ष आरंभ हुआ।
- आगे हरिहर द्वितीय ने (1377 से 1404 ई.) वारंगल, श्रीलंका का अभियान कर विजय प्राप्त की।
- आगे 1486 ई. में सुलुव वंश की स्थापना हुई और फिर 1505 में तुलुव वंश की स्थापना हुई। इस वंश के शासक कृष्णदेवराय के समय विजयनगर साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ। उसने उड़ीसा, बीदर, गोलकुंडा आदि राज्यों पर विजय प्राप्त की।
- 1565 ई. तालीकोट्टा के युद्ध के पश्चात् विजयनगर का अस्तित्व तो रहा किंतु उसकी शक्ति क्षीण हो गई और अरविडु वंश के नेतृत्व में 1615 ई. तक साम्राज्य का अस्तित्त्व बना रहा। फिर अनेक क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ।

अध्याय
8

दिल्ली सल्तनत : शासन तथा आर्थिक-सामाजिक जीवन
(Delhi Sultanate: Administration and Economic–Social Life)

8.1 दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण
8.2 दिल्ली सल्तनत: राज्य की प्रकृति
8.3 खलीफा एवं दिल्ली सल्तनत
8.4 सल्तनतकालीन प्रशासनिक संगठन
8.5 सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था
8.6 इक्ता व्यवस्था

8.1 दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण
(Causes of Decline of Delhi Sultanate)

- दिल्ली सल्तनत के तीन शताब्दियों का इतिहास अपने उत्थान से पतन तक विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से गुजरा। इल्बारियों द्वारा सल्तनत का सुदृढ़ीकरण, खिलजी एवं तुगलक द्वारा साम्राज्य विस्तार तथा तुगलकों के काल से ही विघटन की प्रक्रिया आरंभ होना, अनेक क्षेत्रीय राज्यों का उदय तथा सैयद व लोदियों के काल तक सल्तनत का पतन पूरा हो जाना इसी प्रक्रिया का अंग है।
- वस्तुत: सल्तनत का पतन एक दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम था। इसके पतन के बीज सल्तनत की संरचना में ही विद्यमान थे। सल्तनत की संरचना में सुल्तान एवं कुलीन संबंध सुल्तान-उलेमा वर्ग के बीच संबंध, शासक का सामाजिक आधार, उत्तराधिकार की स्थिति तथा क्षेत्रीय प्रवृत्तियाँ आदि महत्त्वपूर्ण तत्त्व थे। वस्तुत: पतन के संदर्भ में किसी भी एक सुल्तान को उत्तरदायी नहीं माना जा सकता। शासक विशेष की भूमिका को तत्युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिये।
- **सुल्तान एवं कुलीन वर्ग के बीच संबंध**- सैद्धांतिक रूप में सुल्तान निरंकुश होता था किंतु सुल्तान के सिंहासन आरोहण में कुलीन तथा अमीरों की निर्णायक भूमिका होती थी। इस तरह राज्य में विघटनकारी तत्त्व उपस्थित थे। इन कुलीन वर्गों ने शासक की नीतियों को समय-समय पर प्रभावित किया और राज्य के **केंद्रीयकृत स्वरूप पर प्रतिकूल प्रभाव** डाला।

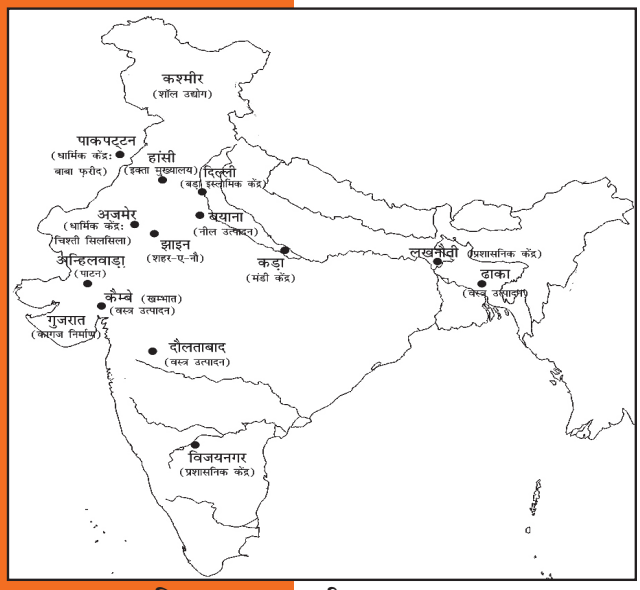

चित्र: सल्तनतकालीन प्रमुख शहर

- कुलीन वर्ग को प्रतिसंतुलित करने के लिये सुल्तानों ने समय-समय पर कई तरीके अपनाए, जैसे-इल्तुतमिश ने **तुर्क-ए-चहलगानी** का गठन किया, इक्ता व्यवस्था के माध्यम से सुल्तान पर आश्रित अमीर वर्ग का निर्माण करना, **बलबन द्वारा जातिमूलक उच्चता पर बल, अलाउद्दीन द्वारा व्यक्तिगत वफादारी** जिस पर गुप्तचरों द्वारा बराबर निगरानी रखी जाती थी। **मोहम्मद बिन तुगलक** द्वारा विभिन्न जाति, मूल पर आधारित अमीर वर्ग की संरचना (**मिश्रित कुलीन वर्ग**) तथा फिरोज शाह तुगलक द्वारा आनुवंशिकता के सिद्धांत पर आधारित एक छोटा कुलीन वर्ग का निर्माण किया गया। इन प्रयासों के द्वारा सुल्तानों ने अपने-अपने काल की समस्या का निराकरण करना चाहा और उन्हें तात्कालिक सफलता भी मिली किंतु परवर्ती सुल्तानों के लिये ये कुलीन एक गहरी चुनौती बने और सल्तनत के विघटन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

अध्याय
9

सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य
(The Art and Architecture of the Sultanate Period)

9.1 वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ	9.3 चित्रकला एवं संगीत
9.2 विभिन्न कालों में विकास	9.4 प्रांतीय स्थापत्य कला

तुर्कों के आगमन के फलस्वरूप वास्तुकला की जो शैली विकसित हुई उसे इंडो-इस्लामिक शैली कहा गया। वस्तुतः दिल्ली सल्तनत की वास्तुकला भारतीय एवं इस्लामी पद्धति के समन्वय से विकसित हुई है। भारतीय पद्धति त्रावियत् शैली (क्षैतिज/शहतीरी शिल्प) एवं इस्लामी पद्धति अरकुएट (मेहराब, धरनी) शैली पर आधारित थी।

तुर्कों को आरंभ में ढेरों युद्ध लड़ने पड़े तथा उनके पास समयाभाव था, फिर भी उन्होंने स्थापत्य कला के संदर्भ में काफी प्रयास किये। वस्तुतः नए शासकों की प्राथमिक आवश्यकताओं में, रहने के लिये भवन एवं अपने समर्थकों के लिये **पूजा स्थलों** का निर्माण करना शामिल था। अतः उन्होंने मौजूद भारतीय मंदिरों एवं भवनों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करके अपने निर्माण कार्य को आगे बढ़ाया।

9.1 वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ *(Key Features of Architecture)*

भवन निर्माण सामग्री

- तुर्कों के आगमन से पूर्व के भवनों में बहुत कम ऐसे उदाहरण हैं जिनमें **खान से निकाले** गए **नए पदार्थों** (पत्थरों) का प्रयोग किया गया हो।
- इस काल में पक्की इमारतों में **पत्थरों** का प्रयोग बहुतायत हुआ है।
- भवनों की नींव खुरदरे और छोटे कंकरों से भरी गई जबकि भवनों का ऊपरी ढाँचा बनाने में अधिक अच्छे पत्थरों का इस्तेमाल हुआ और भवनों को अच्छी तरह से प्लास्टर किया गया।
- भवनों को **प्लास्टर** करने में प्रायः **खड़िया (जिप्सम)** का प्रयोग किया गया। 15वीं सदी के आस-पास जब गच्चकारी का कार्य (Stucco work) आम प्रचलन में आ गया तो दीवारों और छतों के प्लास्टर के लिये खड़िया, मिट्टी के गारे को वरीयता दी गई।
- खिलजीकालीन भवनों में पत्थरों को जोड़ने के लिये नई शैली का प्रयोग हुआ। इसमें पत्थरों को दो तरह से जमाया गया शीर्ष (headers) और फैलाव (Stretchers)। यह शैली आगे निरंतर रही और मुगलों के भवन निर्माण तकनीक की विशेषता बनी।
- भवनों में लाल-बलुआ (पीले) पत्थर तथा संगमरमर की पट्टियों का भी प्रयोग किया गया।

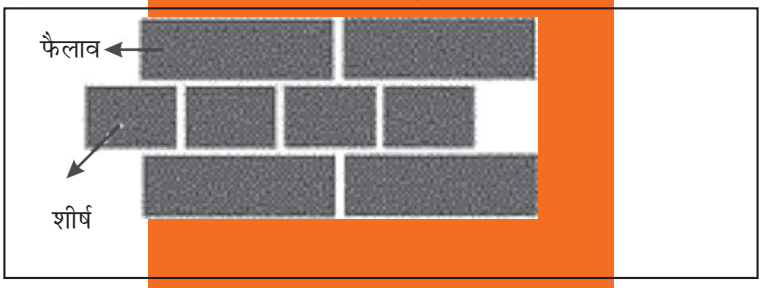

सार्वजनिक भवन निर्माण

- सल्तनत काल में शाही भवनों के अतिरिक्त सार्वजनिक भवनों का भी निर्माण हुआ। इन भवनों में सराय, पुल, कुएँ और बावड़ी, बांध, कोतवाली, कचहरी (प्रशासनिक भवन) कटरा (बाज़ार) हमाम (सार्वजनिक स्नानागार) आदि होते थे।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456